इकाई 9 पेरियार ई. वी. रामास्वामी नायकर : चिंतन और विचार

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 पेरियार : जीवन–परिचय

9.3 पेरियार का आंदोलन : राजनीतिक सक्रियता

9.4 आत्मसम्मान आंदोलन की क्रांतिकारी भूमिका

9.5 द्रविड़ कळगम का विकास

9.6 पेरियार का धर्म चिंतन : नास्तिकता और बुद्धिवाद

9.7 स्त्री मुक्ति से संबंधित विचार

9.8 सारांश

9.0 उद्देश्य

यह इकाई दक्षिण भारत में दलित मुक्ति आंदोलन को दिशा देनेवाले पेरियार ई. वी. रामास्वामी नायकर पर केंद्रित है। इसमें दलित और स्त्री मुक्ति के लिए पेरियार ने किए कार्य तथा उनके चिंतन–विचार को समझना है। इस इकाई का उद्देश्य यह है कि दक्षिण भारत में समाज सुधार और दलित मुक्ति के संदर्भ में चिंतन की जो परंपरा रही है, उसे आधुनिक समय में दिशा देनेवाले पेरियार ई. वी. रामास्वामी नायकर के योगदान को विद्यार्थी समझ सकें। इस इकाई के अध्ययन के बाद आपः

- दक्षिण भारत में पेरियार ई. वी. रामास्वामी नायकर द्वारा चलाये गए सामाजिक आंदोलन, संघर्ष और योगदान को जान पाएंगे;
- पेरियार की राजनीतिक सक्रियता और द्रविड़ कळगम के विकास को जान पाएंगे;
- पेरियार के धार्मिक चिंतन के प्रभावस्वरूप निर्मित हुई परिवर्तनकामी चेतना के पहलुओं को समझ सकेंगे;
- पेरियार द्वारा स्त्री के लिए समान अधिकार और पितृसत्ता के दबावों से मुक्त होने हेतु किए प्रयासों को समझ सकेंगे;

9.1 प्रस्तावना

पेरियार ई. वी. रामास्वामी नायकर ने बीसवीं सदी के भारतीय समाज में तर्क और विवेक के माध्यम से सामाजिक बदलाव हेतु आत्मसम्मान का आंदोलन चलाया। इनके आंदोलन ने दक्षिण भारत के जनमानस में स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की चेतना निर्मित हुईं। बीसवीं सदी के आरंभिक काल में देश गहरे उथल फुथल के दौर में प्रवेश करता है। देश में एक ओर विदेशी शासन की पराधीनता से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष चल रहा था। इसका नेतृत्व महात्मा गाँधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के परचम तले मध्य वर्ग ने

किया। दूसरी ओर देश में हिंदू धर्म की वर्णाश्रम व्यवस्था और इसके संस्कारों में शामिल दलित–वंचितों की मुक्ति के प्रयास भी जारी थे। लेकिन मध्य वर्ग को समाज की पिछड़ी–दलित जातियों की वंचना की विशेष परवाह नहीं थी। पिछड़ी–दलित जातियों को कांग्रेस की ओर से सुनहरे भविष्य के आश्वासन के अलावा कुछ ठोस नहीं मिला। इस उदासीनता और सामाजिक पराधीनता से संघर्ष का दायित्व दलित, पिछड़े और गैर ब्राह्मण नेताओं ने उठाया। इनमें पेरियार ई. वी. रामास्वामी नायकर महत्वपूर्ण नेता के रूप में उभरते हैं। वे कांग्रेस की राजनीति से निराश होकर गैर ब्राह्मण राजनीतिक धारा की ओर उन्मुख हुए। इस क्षीण धारा को उन्होंने आंदोलन का रूए दे दिया। आज दक्षिण भारतीय जीवन में आधुनिकता का जो रूप है उसके निर्माण का प्रस्थान बिंदु पेरियार के क्रांतिकारी विचारों से आरंभ होता है। आइए, पेरियार के आंदोलन और चिंतन पर केंद्रित इस इकाई का अध्ययन करते हैं।

9.2 पेरियार : जीवन–परिचय

जनता के बीच पेरियार अथवा थांति पेरियार के नाम से लोकप्रिय इरोड वेंकेंट रामास्वामी नायकर विज्ञान बोध और तार्किकता के एक ऐसे क्रांतिकारी विचारक थे, जिन्होंने समाज के दलित पिछड़े समुदाय को सम्मान से जीने और समाज में बराबर के अधिकार पाने का रास्ता सफलतापूर्वक दिखाया। पेरियार का जन्म 17 सितम्बर, 1879 को तमिलनाडु के कोयम्बटूर जिले के इरोड नामक कस्बे में एक सम्पन्न, परम्परावादी हिन्दू परिवार में हुआ था। उनके पिता वेकेंट नायकर कस्बे के एक नामी व्यापारी और उच्चकुलीन ब्राह्मण थे और माता चिन्नम्मा गृहस्थ महिला थी। 1885 में पेरियार एक स्थानीय प्राथमिक विद्यालय में प्रवेशित हुए। बालक पेरियार स्वभाव से चंचल और शरारती थे। सनातन हिंदू पिता ने ब्राह्मण शिक्षकों की देख–रेख में बालक को वेद पुराण और संस्कृत के ग्रंथों की ध ार्मिक–आध्यात्मिक शिक्षा से परिचित कराया। लेकिन इसका रूखा तर्क चिंतन उनको ज्यादा आकार्षित नहीं कर पाया। स्कूल की अनुशासन से बंधी शिक्षा में पेरियार का मन नहीं लगता था। कोई पाँच साल से कम की औपचारिक शिक्षा मिलने के बाद उन्होंने स्कूल छोड़ दिया और पिता के व्यापार में हाथ बंटाने लगे। शिक्षा से अलग व्यापार में वे कहीं अधिक सफल रहे।

उनके घर पर भजन तथा उपदेशों का सिलसिला चलता रहता था। पेरियार बचपन से ही इन उपदशों की प्रामाणिकता पर सवाल उठाते थे। हिन्दू महाकाव्यों तथा पुराणों में कही बातों की परस्पर विरोधी तथा बेतुकी बातों का माखौल भी उड़ाते थे। बाल विवाह, देवदासी प्रथा, विधवा पुनर्विवाह के विरूद्ध अवधारणा, स्त्रियों तथा दलितों के शोषण के पूर्ण विरोधी थे। उन्होने हिन्दू वर्ण व्यवस्था का बहिष्कार किया। उनकी बढ़ती सामाजिकता से चिंतित उनके पिता ने 19 वर्ष की अल्पायु में ही नागम्मा से विवाह कर दिया जो आगे चलकर पेरियार के आंदोलनों में सफल सहयोगी के रूप में उभरीं। वैवाहिक बंधन भी पेरियार को रोक न सका और वे जी जान से सामाजिक सुधारों में जुट गये। युवक पेरियार की नए स्थानों में धूमने फिरने और लोगों से मेल जोल करने में गहरी रुचि थी। इसी स्वभाव के कारण उन्हें सन् 1905 में बनारस की तीर्थयात्रा करने का मन हो आया। इस तीर्थ यात्रा ने उनकी जीवन दृष्टि को क्रांतिकारी रूप से बदल दिया। बनारस में ध ार्म के नाम पर पंडों की लूट खसोट, पाखण्ड,एक ओर पवित्रता और मोक्ष के आदर्श विचार तो दूसरी ओर सामने पड़ी गंदगी, सडांध, भूख, दुर्गंध, भीख, ठगी, लाचारी और छीना झपटी की बजबजाहट। इन सबसे मानवता शर्मशार हो जाती है। पेरियार ने इस बात का अहसास किया कि ऐसे स्थान जिसमें मानव जाति के पतन का चरम निकृष्ट रूप दिखाई पड़ता है, वहाँ पर आध्यात्मिक उत्कर्ष और पवित्रता की बात करना बेमानी है। तमाम कष्ट

उठाकर भटकते हुए पेरियार का भूख से बुरा हाल हो गया। अंदर भूख की आग लगी थी। सामने ब्राह्मणों की पाकशाला में स्वादिष्ट भोजन की महक आई। महक उन्हें पाकशाला के भीतर खीच लाई। वे ब्राह्मणों की पंगत में सरक आए कि मूँछों के कारण उन्हें पहचान लिया गया। वहाँ ब्राह्म्ण में मूँछ का चलन नहीं था। उन्हें गली में धक्का मार कर निकाल दिया गया। अपमान का दंश भूख की आग के सामने टिक नहीं पाया। वे बाहर फेंके गए जूठन से ही क्षुधा मिटाने के लिए अगल बगल के पशुओं से जूझने लगे, हाथ पैर चलाने लगे कि उनकी नजर पाकशाला के पट्ट पर गई, जिस पर इसको बनवाने वाले उनके अपने सजातीय भाई का नाम चमक रहा था। पेरियार के हाथ रुक गए। चेतना वापस आ गई और भूख मर गई। इसके साथ ही बचपन से अंदर ठूँस कर भरा हुआ हिंदूपन भी मर गया। तर्क और विवेक के साथ नए पेरियार का उदय हुआ। इस घटना में ही आने वाले 'आत्मसम्मान आंदोलन' के बीज मौजूद थे। अतः अपार वैभव में पले पेरियार को किसी तरह की कमी नहीं थी। परंतु कट्टरता के भयानक परिणामों को देख कर बचपन से ही पेरियार के मन में हिन्दू रूढ़िवाद के प्रति अक्रोश उत्पन्न होने लगा था। पेरियार तमिल दलितों की पीड़ा का अहसास कर वह क्षुब्ध हो जाते थे। उन्हें लगता था कि उत्तर भारतीय ब्राह्मणों का सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक वर्चस्व ही दलितों की पीड़ा का मुख्य कारण है। इन बातों से दुःखी होकर पेरियार ने यह संकल्प लिया कि वह इस अन्याय को मिटा कर रहेंगे। पेरियार के इस निश्चय से ब्राह्मणों के एक बड़े वर्ग में खलबली मच गयी और उन्होंने पेरियार को ब्राह्मण विरोधी व नास्तिक करार दिया।

9.3 पेरियार का आंदोलन : राजनीतिक सक्रियता

तमिलनाडु में पेरियार का काल राष्ट्रीय राजनीति में गाँधी जी की सक्रियता का काल है। इसी समय तमिलनाडु में मुदिलियार के नेतृत्व में गैर ब्राह्मणों, पिछड़े वर्ग के नेताओं ने अपना राजकिय मंच बनाया। राजनीति में ब्राह्म्ण वर्चस्व के खिलाफ जस्टिस पार्टी के द्वारा अपना दबाव समूह आरंभ किया। ऐसे परिवेश में पेरियार ने सन् 1917 में मद्रास प्रेसिडेंसी एसोसिएशन नामक संस्था की सदस्यता ग्रहण की। इस समय उनके ऊपर महात्मा गाँधी के आदर्शवादी विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने विदेशी कपड़ों का त्याग कर दिया और खादी को अफनाया। शराब और नशाखोरी के खिलाफ अभियान चलाया। पेरियार ने सन् 1920 के असहयोग आंदोलन के समय अपने थोक कारोबार को त्याग कर राजनीति को ही अपना मकसद बना लिया। वे अब अपना समय और ध्यान कांग्रेस पार्टी को समार्पित करने लगे। वे कांग्रेस के द्वारा समाज में समता परक एजेंडे को आगे बढ़ाना चाहते थे। अपनी लगन और निष्ठा से वे तमिलनाडु कांग्रेस कमेटी के सचिव चुने गए। उनके माध्यम से प्रदेश में कांग्रेस का प्रचार प्रसार बढ़ता गया। इस बीच गैर ब्राह्म्ण तबके के हितों के लिए वे निरंतर अपने स्तर से प्रयास भी करते रहे। 1920 में उन्होंने कांग्रेस के मंच पर शिक्षा और नौकरियों में सभी समुदायों को समान अवसर प्रदान करने का प्रस्ताव किया। यह प्रस्ताव श्री निवास अयंगार जैसे नेताओं के विरोध के कारण पार्टी में पास नहीं हो पाया। इस असफलता के बाद भी पेरियार पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं की सदाशयता पर यकीन करते हुए अपना कार्य करते रहे। देर सबेर ही इन नेताओं को सामाजिक जीवन में समानता के महत्व का स्वयं बोध हो जाएगा। कांग्रेस में उनका कार्य 1924 में वैकोम सत्याग्रह के समय अपने उत्कर्ष पर पहुँचा। वैकोम में प्रसिद्ध शैव मंदिर के पुजारी शूद्रों–दलितों को मंदिर प्रवेश की बात तो दूर, आस पास की सड़कों पर उनका चलना फिरना भी सहन नहीं कर पाते थे। उनका दावा था कि इससे मंदिर की पवित्रता भंग होती है। सत्याग्रह का तात्कालिक कारण दलित नेता आयंकली की

बैलगाड़ी को सड़क पर रोका जाना था। बैलों को तो सड़क से गुजरने दिया गया लेकिन दलित नेता को दूसरी सड़क से जाने को बाध्य किया गया। वसुधैव कुटुम्बकम और वेदांत की आध्यात्मिक भाईचारे की बात करने वाले हिंदू धर्म का यह जघन्य और वास्तविक रूप था। इस मंदिर में प्रवेश के विषय पर पुराने समय में शूद्रों का नरसंहार भी हो चुका था। इस अधम मानव विरोधी मानसिकता के विरोध में ही वैकोम सत्याग्रह आरंभ हुआ। श्री नारायण गुरु के अनुयायियों और कुछ कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने यह सत्याग्रह आरंभ किया। इसे गाँधी जी नियंत्रित रूप से चलाना चाहते थे। लेकिन इस भावुक मुद्दे पर जन भावनाओं का सैलाब उमड़ पड़ा। सिंगापुर, बर्मा और दक्षिणपूर्व एशिया से इस सत्याग्रह के समर्थन में स्वर उभरे। पंजाब जैसे दूर दराज के क्षेत्र से अकाली जत्थे समर्थन देने के लिए वैकोम आ गए। कांग्रेस का राष्ट्रीय नेतृत्व समझौते द्वारा कोई हल निकालना चाहता था। कुछ सजग लोगों के बुलावे पर पेरियार इस सत्याग्रह में भाग लेने पहुँचे, जबकि महात्मा गाँधी दूसरे क्षेत्रों के लोगों की भागीदारी करने के विषय पर अपनी नाराजगी जाहिर कर चुके थे। पेरियार ने इसकी परवाह नहीं की। उनके सत्याग्रह में भाग लेने से जनभावनाओं में आक्रोश का समावेश हुआ। वे इस सत्याग्रह में शासन के आदेशों की अवज्ञा पर कायम रहे, एक नहीं दो बार गिरफ्तार हुए। उनके संघर्ष को देखकर ही तमिलनाडु कांग्रेस कमेटी ने 1925 में उनके साहस और योगदान की प्रशंसा में प्रस्ताव पारित किया, जनता ने उन्हें 'वैकोम वीरन' की उपाधि से नवाजा। प्रशंसा के इन शब्दों के बावजूद पेरियार, कांग्रेस और विशेषकर महात्मा गाँधी की नीतियों से घुटन महसूस कर रहे थे।

गाँधी कांग्रेस की समूची ऊर्जा राजनीतिक सत्ता में भागीदारी और शनै–शनै उसकी प्राप्ति की ओर लगाना चाहते थे। इस कार्यप्रणाली से मध्यवर्ग तो संतुष्ट हो सकता था लेकिन वह एझवा, वन्नियार या वह परिया नहीं, जो बेवजह ही पग पग पर जाति के भेदभाव और इसकी जलालत सहने को मजबूर था। यह नजरिया ही पेरियार के कांग्रेस से असंतोष का कारण था। वे राजनीतिक स्वतंत्रता के विरोधी नहीं थे, लेकिन जाति के रूप में सामाजिक सड़न को समाप्त किए बिना ऐसी किसी राजनीतिक व्यवस्था का वो समर्थन करने के पक्ष में नहीं थे, भले वह विदेशी अंग्रेजों की हो अथवा देशी ब्राह्मणों की। वे सामाजिक समानता के लिए जातिगत रचना के भेदभाव के खिलाफ कार्यवाही के समर्थक थे। उनके लिए शराब बंदी, विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और खादी की तुलना में समाज में फैली जाति और इसके आवरण हिंदू धर्म के मकड़जाल को समाप्त करना कहीं अधिक आवश्यक था। ऐसी राजनीतिक स्वतंत्रता से पिछड़ों और दलितों का क्या सरोकार जिन्हें धार्मिक संस्कारों में पाप योनि का प्राणी माना गया है। जातिगत प्रताड़ना कोई सामाजिक विचलन अथवा किसी व्यक्ति का दोष नहीं बल्कि लोक के बीच में मान्य चलन था। इसके सामने विदेशी शासन उनके लिए प्रताड़ना के बजाय राहत के रूप में अधिक दिखाई पड़ता है। पेरियार अपने इसी चिंतन के कारण कांग्रेस से निरंतर क्षुब्ध होने लगे। क्षोभ की आग में चेरन महादेवी गुरुकुल की घटना ने घी का काम किया। कांग्रेस पार्टी शिक्षा के प्रसार के लिए शिक्षा संस्थानों को आर्थिक सहायता दिया करती थी। तिरनावेली जिले में चेरन महादेवी गुरुकुल भी ऐसी संस्था थी, जिसे कांग्रेस का पैसा सहायता के तौर पर मिलता था। इस गुरुकुल में ब्राह्मण और गैर ब्राह्मणों के बीच खान–पान और स्थान का भेदभाव किया जाता था। पेरियार ने इस भेदभाव का विरोध किया और इस बात पर घोर आपत्ति जताई कि यह सब कांग्रेस की सरपरस्ती और आर्थिक सहायता की बुनियाद पर हो रहा है। इस पर कोई कार्यवाही न होने पर उन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। उन्होंने पार्टी छोड़ते समय अपने क्षोभ को कुछ इन शब्दों में व्यक्त किया– "कांग्रेस गैर ब्राह्मणों का कोई भला नहीं कर सकती, अब से मेरा मकसद इसका विनाश करना है।"

पेरियार ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत कांग्रेस पार्टी के साथ की थी, लेकिन कुछ समय बाद ही उनका कांग्रेस और गांधी दोनों से ही मोहभंग हो गया। पेरियार अनेक मुद्दों पर कांग्रेस से आगे की सोच रखते थे। उल्लेखनीय है कि सन् 1950 में भारत को समाजवादी गणतंत्र घोषित किया गया, लेकिन पेरियार ने इससे बीस साल पहले यह मांग उठा दी थी कि भारत की राजनीतिक व्यवस्था समाजवादी गणतंत्र होनी चाहिए। पेरियार ने एक रूसी पत्रकार से साफ शब्दों में कहा था– 'हमारे देश को स्वतंत्र हुए 17 साल बीत चुके हैं, लेकिन सच यह है कि यह आजादी सिर्फ ब्राह्मणों को ही मिली है।' पेरियार द्वारा लगभग 95 साल की उम्र में दिए एक भाषण में परिवर्तनकामी वैचारिकी प्रस्तुत है। भाषण एक का अंश है– 'भारत की लगभग 97.25 प्रतिशत आबादी गैर ब्राह्मणों की है। सभी धर्मो के अनुयायी परस्पर भाईचारा मानते हैं। सिर्फ हिंदू धर्म ही ऐसा है जिसमें भाईचारा नहीं है। ऊंची–नीची जाति के लोग हैं। यह सामाजिक अपमान हम कब तक झेलते रहेंगे।' इस भाषण में उन्होंने राजनीतिक मंच से ईश्वर तथा धर्म की समाप्ति और कांग्रेस एवं ब्राह्मणवाद का बहिष्कार करने का आह्वान भी किया था। पेरियार ने दक्षिण भारत की राजनीति से ब्राह्मणवाद के पैर उखाड़ दिये और समाज व्यवस्था तथा राजनीति में दलित पिछड़े समाज को शिखर पर बैठा दिया। तमिलनाडु की राजनीति में आज भी पेरियार रामास्वामी नायकर की परिकल्पना साकार हुई देखी जा सकती है।

9.4 आत्मसम्मान आंदोलन की क्रांतिकारी भूमिका

पेरियार का उदय कोई आकास्मिक घटना अथवा संयोग का परिणाम नहीं था। सामाजिक दशाओं के बदलाव के दबाव ने ही पेरियार जैसे विराट कद के नेता को अपना जरिया भर बनाया। इस बात को जानने के लिए हमें समकालीन तमिल समाज का विहंगावलोकन करना पड़ेगा। अंग्रेजी शासन के चलते पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार हुआ, शूद्रों को पहली बार कानूनी समानता का अधिकार मिला। इसके कारण शूद्र वर्ग की तमाम पिछड़ी जातियों को अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने का अवसर मिला। अब इनकी आर्थिक स्थिति तो सुधर गई पर सामाजिक स्थिति पहले की तरह जस की तस रही। इस विरोधाभास ने ही पिछड़े और दलित वर्गों में परिवर्तन की चेतना को जन्म दिया। पिछड़ी जातियों के बीच में एक ऐसा सामाजिक समूह आकार ले चुका था, जो गैर कृषि कार्यों से अपनी आजीविका चला सकता था, गाँवों की सामाजिक जकड़न से आजाद शहर में बसता था। पाश्चात्य शिक्षा के द्वारा फ्रांसीसी क्रांति के महान नारे – स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के अर्थ को आत्मसात कर सकता था। पिछड़ी जातियों का यह मध्य वर्ग अब समाज और राजनीति में अपनी आार्थिक स्थिति के समान ही एक बेहतर सामाजिक और राजनीतिक स्थिति का आकांक्षी था। दक्षिण में जस्टिस पार्टी का उदय इसी आकांक्षा का परिणाम था। यह पिछड़े वर्गों के लोगों की पार्टी थी और ब्राह्मणों के वर्चस्व का विरोध इसका मुख्य सरोकार था। ब्राह्मण वर्ग हमेशा की तरह सत्ता के साथ भी था और सत्ता के विरोध में भी। वह हाजिर भी था और नाजिर भी। एक ओर वह ब्रिटिश लोगों की संस्कृति को अपनाए हुए था दूसरी ओर अपनी हिंदू पहचान को भी कसकर पकड़े हुए था। लोकप्रिय प्रकाशनों में लुंगी पर अंग्रेजी बेल्ट लगाये दक्षिण भारतीय ब्राह्मण का सटीक चित्र इस युग के सामंजस्य को प्रस्तुत करता है। वह अंग्रेजी शासन के सभी संभावित कारगर पदों पर आसीन था और इसी शासन की घोर विरोधी राष्ट्रीय पार्टी के सभी पदों पर वही मौजूद था। वह कभी नरमपंथी तो कभी गरमपंथी अलग अलग रूपों–मुद्राओं में था और इन रूपों के बावजूद वह एक स्वर था। इस स्थिति से तिलमिलाए और झुँझलाए हुए जस्टिस पार्टी के लोग निरंतर ब्राह्मण वर्चस्व से जद्दोंजहद करते रहें, उछल कूद करते रहें। गैर ब्राह्मणों के लिए थोड़ी सहानुभूति के अलावा वे किसी निर्णायक मुकाम को कभी हासिल नहीं कर पाए। उनके पास ऐसा कोई चिंतन नहीं था, जो वाक्

निपुण और वेद वेदांत दर्शन प्रवीण ब्राह्मणों को चिंतित कर पाए। न ही उनके पास ऐसा कोई जन समर्थन था कि ब्रिटिश सत्ता को उनके हितों की गहरी चिंता हो जाए।

1925 में कांग्रेस से निराश पेरियार ई. वी. रामास्वामी नायकर का जब इस पटल पर आगमन हुआ तो हालात बिजली की तेजी से बदल गए। पेरियार के पास जनता के बीच कार्य करने का अनुभव था और अनुभूति की बुनियाद पर विकसित किया गया वह चिंतन था, जिसके आगे वेद और वेदांत का दर्शन पनाह मांग सकता था। उन्होंने राजनीतिक स्वतंत्रता की निस्सारता को समझा। शूद्रों के रूप में पिछड़े वर्ग की समस्या थी कि ध ार्मिक तथा सामाजिक परंपराएं उन्हें मनुष्य का दर्जा देने से ही इंकार करती थीं। पेरियार ने ऐसे हिंदू धर्म को ही नकार दिया। उनके अनुसार अपनी मनुष्यता का बोध, सम्मान अथवा आत्मसम्मान ही सबसे महत्वपूर्ण है। मानव होना वास्तव में अपने 'सूयामरियादई' अथवा आत्मसम्मान के साथ जीने का ही दूसरा नाम है। तिलक ने नारा दिया – 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' इस मोहक नारे का दागदार पहलू यह था कि उनके इस 'हमारा' सर्वनाम के दायरे में पिछड़े और दलित शामिल ही नहीं थे। इसके जवाब में पेरियार ने कहा कि राजनैतिक सत्ता नहीं, आत्मसम्मान ही व्याक्ति का जन्म सिद्ध अधि ाकार है। वह मानव जीवन व्यर्थ है जो आत्मसम्मान से रहित है। इस आंदोलन को पेरियार ने 'अरिवु विदूतलाई इयक्कम' अथवा समझ को मुक्त करने का आंदोलन कहा। पिछड़े वर्ग की समस्या उसके अस्तित्व और अस्मिता बोध से जड़ी हुई है। हिंदू धर्म दर्शन अस्मिमनुष्य के अस्तित्व और अस्मिता को नकारता है। हिंदुओं के पूजनीय ग्रंथ भगवदगीता में खुले शब्दों में कहा गया है – पिछडी और दलित जातियों के सभी लोग पापयोनि के हैं। बस यह उनके साथ पशुवत् व्यवहार करने का प्रमाण माना गया है। किसी चेतना के अभाव में इस सोच को ब्राह्मण से ज्यादा पिछड़े वर्गों के लोग अधिक सहमत नजर आते हैं। पेरियार ने इस सोच को बदल दिया। उनके आत्मसम्मान आंदोलन का उद्देश्य सभी तरह के शोषण से मुक्ति है– 'जाति हीन, वर्ग हीन समाज का विकास, जिसमें अंधविश्वास, सामाजिक प्रताड़ना से मुक्ति हो'। शोषण के अभाव में ही समाज के सभी सदस्यों के आत्मसम्मान का भाव पनप सकता है, फल फूल सकता है। यह आंदोलन राजनीतिक प्रक्रिया में उभरा था, सामाजिक परिवर्तन का लक्ष्य ले कर चला और विवेक को इसने अपना साधन बनाया। सन् 1925 में पेरियार ने 'कुदी आरसू' नामक एक पत्रिका निकाली और इसके माध्यम से ही आंदोलन के विचारों को जनता के सामने रखा। बाद में 'नामाथ्थ कोरोक्कल' और 'तिराविताक्कालका लतेयम' नामक पम्फलेट में इस आंदोलन के उद्देश्यों को सामने रखा–

- कुछ जातियों को दूसरे अन्य लोगों के ऊपर श्रेष्ठता कायम करने का अधिकार है ऐसी सामाजिक व्यवस्था का खत्म हो।
- किसी व्यक्ति को जाति, समुदाय से परे अवसरों की समानता उपलब्ध कराना। जीवन के सभी क्षेत्रों में स्त्री और पुरुष के बीच समान व्यवहार और आवश्यक हो तो कानून के द्वारा समानता सुनिश्चित करना।
- सभी व्यक्तियों को विकास और उन्नति के समान अवसर प्रदान करना। अस्पृश्यता जैसी जघन्य प्रथा का उन्मूलन करना। मानव के बीच सहज संबंधों को बढ़ावा, ताकि लोगों के बीच बंधुत्व की भावना का प्रसार संभव हो सके।
- सार्वजनिक संपत्ति से मंदिर, मठ और वैदिक संस्थानों के निर्माण से परहेज करना। इस संपत्ति का प्रयोग लोगों को शिक्षा प्रदान करने, बेरोजगारों को रोजगार प्रदान करने में करना।

सन् 1925 से इन विचारों का प्रचार प्रसार होता रहा। सामान्य जनता ने इन विचारों की सरलता और साफगोई की सराहना की। पर्याप्त समर्थन मिलने पर 17 फरवरी, 1929 में चिंगलपेटटू में पहला आत्मसम्मान सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें छह हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। इसमें आधी से अधिक संख्या दूरदराज के क्षेत्रों से आने वाले लोगों की थी। दूसरा सम्मेलन 10 मई, 1930 को इरोड में हुई। इसमें विचार के स्तर फर आगे बढ़कर मूर्ति पूजा का भी विरोध किया गया। इसे आडम्बर और भेद पैदा करने वाला बताया गया। विरोधनगर में सन् 1931 को आयोजित तीसरा सम्मेलन इस आंदोलन का महत्वपूर्ण पड़ाव साबित हुआ। इसमें अस्पृश्यता का कड़े शब्दों में विरोध किया गया। इसके मंच से अंतरजातीय विवाह का समर्थन किया गया।

तीसरे सम्मेलन के बाद आत्मसम्मान आंदोलन का जनता के बीच तेजी से प्रसार हुआ। सामान्य जनता ने शिक्षा के महत्व को पहचाना। जाति के आधार पर भेदभाव की सामाजिक मान्यता अब धीरे–धीरे समाप्त होने लगी। लोगों ने जाति को धार्मिक कर्तव्य के बजाय विचलन रूप में स्वीकार करना शुरू कर दिया। जाति की दीवारें समाप्त तो नहीं हुईं लेकिन उसमें दरार जरूर पड़ गई। उस दरार से ही सही कम से कम अब लोगों के बीच सामाजिक व्यवहार संभव हो गया। व्रत, त्यौहार, मनौती, तीर्थ यात्रा, निषेध, विधि ा विधान, हवन के अंधविश्वासों तथा आडंबरों में जकड़ा तमिल समुदाय आधुनिकता की राह पर चल पड़ा।

9.5 द्रविड़ कळगम का विकास

आत्मसम्मान आंदोलन ने जनता की सामान्य समझ का स्तर ऊपर उठा दिया। वेद पुराण की मिथक शैली ने कल्पना और यथार्थ के बीच घालमेल पैदा कर दिया। फलतः साधारण भारतीय का स्थान और काल का समूचा बोध एक हास्यास्पद विभ्रम का रूप ले लेता है। इस कारण दक्षिण भारत क्या, हर जगह की सुनसान गुफा पाण्डवों के अज्ञातवास की शरण स्थली, हर गोल पत्थर शिवलिंग, हर अबूझ आकृति राक्षसों से जुड़ जाती है। आत्मसम्मान आंदोलन का सबसे बड़ा योगदान स्थान और काल के बोध को कुछ मायने में बहाल कर पाने में सामान्य जनता की समझ का स्तर उठाने में था। इसके बाद ही प्रगति का अगला पड़ाव आरंभ होता है। संघर्ष संगठन की दिशा में आगे बढ़ता है। राजनीतिक क्रिया कलापों के बीच सन् 1931 में पेरियार विदेश यात्रा पर निकले। उन्होंने दक्षिणपूर्व एशिया, यूरोप समेत उस समय की शक्ति के रूप में उभरते हुए सोवियत यूनियन को देखा। इनकी तुलना में भारत की दशा देखकर उनमें गहन रोष भर गया। अपने पत्र 'कुदी आरसू' में उन्होंने समूची व्यवस्था के खिलाफ ही विद्रोह का आह्वान कर दिया। इस पर उन्हें 1933–34 में सरकार द्वारा राजद्रोह के आरोप लगा कर जेल में डाल गया। जेल में उन्होंने आत्मसम्मान आंदोलन की मूल भावना के आधार पर 14 सूत्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जो कांग्रेस और जस्टिस पार्टी, दोनों ही पार्टियों को भेजा गया। इस दिशा में कांग्रेस ने बेरूखी तो जस्टिस पार्टी ने सहानुभूति दिखाई।

गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया एक्ट 1935 के तहत सन् 1937 में प्रांतों में सरकारें चुन कर आईं। सी. राजगापालाचारी के नेतृत्व में ऐसी ही कांग्रेस सरकार ने जनता की राय जाने बगैर एकतरफा रूप में स्कूली शिक्षा में हिंदी को अनिवार्य विषय बना दिया, जबकि वहाँ की जनभाषा तमिल के लिए कोई अनिवार्यता नहीं थी। आत्मसम्मान आंदोलन के क्रम में तमिल भाषा जनता के संघर्ष और स्वप्न की भाषा बन गई। यह आर्य श्रेष्ठता के मिथक के सामने तमिल लोगों के सम्मान का जरिया थी। ऐसे में हिंदी को थोपने और तमिल को उपेक्षित करने के कांग्रेसी प्रयास को द्रविड पहचान को दबाने का एक कदम माना

गया। इस का जोरदार विरोध करते हुए पेरियार ने नारा दिया 'तमिलनाडु तमिलों के लिए'। जनता में हिंदी विरोध की लहर फैल गई तब सरकार ने पेरियार को पुनः गिरफ्तार किया। पेरियार तमिल स्वाभिमान के प्रतीक बन कर उभरे। उनकी लोकप्रियता का अनुमान इस बात से किया जा सकता है कि कैद के भीतर ही जस्टिस पार्टी ने उन्हें अपना अध्यक्ष घोषित कर दिया। बाहर आने पर उन्होंने जनता के रोष को दिशा देने के लिए 1939 में 'द्रविड नाडु कांप्रेंस' का आयोजन किया। इसका उद्देश्य तमिल लोगों को एक मंच पर इकट्ठा करना था। आगे चलकर उनकी सरपरस्ती में जस्टिस पार्टी का पुनर्गठन 'द्रविड कळगम' के रूप में हुआ। इसका एक संविधान बना, बीच में लाल रंग के सूरज वाला काला झण्डा इस संगठन का झण्डा बन गया। इसमें काला रंग द्रविड लोगों के शोषण और वंचना का तो लाल रंग मुक्ति की आकांक्षा का प्रतीक बन गया। इस कळगम का उद्देश्य एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना करना था। इस राज्य में जातिविहीन और समता परक समाज का गठन होगा ताकि दलित शोषित लोगों को उत्थान का अवसर मिल सके।

द्रविड कळगम के आंदोलन ने एक बार फिर से लोगों की चेतना को झकझोर दिया। भारी संख्या में ओजस्वी लेखक और वक्ता इसकी भाव भूमि से सार्वजनिक जीवन में आए। इसने नवयुवकों में अपनी पहचान और उत्थान का उत्साह भर दिया। इतिहास बोध में प्राचीन तमिल राज की उपलब्धियों को सांस्कृतिक उन्नति के चरम के रूप में दर्शाया गया। इसके सामने आर्य संस्कृति बर्बर और विध्वंसक संस्कृति का एक उदाहरण मात्र ही ठहरती। इस सांस्कृतिक चेतना ने तमिलों का एक समुदाय के रूप में पुनर्गठन किया। इस आधुनिक तमिल समाज ने ब्राह्मणवादी संस्कारों से वितृभणा का भाव दिखाया। माथे पर जातिपरक निशान, नाम में जाति की पहचान, आदि का बहिष्कार किया गया। लोगों के बीच आत्मसम्मान और अंतरजातीय विवाह आरंभ हुए। इस प्रसार के बावजूद पेरियार के मन में इसको राजनीतिक रूप देने, चुनावी जोड़–तोड़ में शामिल करने को लेकर आशंका बनी हुई थी। वे चुनावी राजनीति को नैतिक रूप से पतन और भ्रष्ट करने वाला मानते थे। वहीं कळगम में नौजवानों का एक दल राज सत्ता पर नियंत्रण रखना सामाजिक बदलाव के लिए आवश्यक मानता था। इस दल के सबसे प्रभावी नेता सी. अन्नादुरै थे। सन् 1949 में एक नितांत व्यक्तिगत घटना से उन्हें अफनी इच्छा को साकार करने का अवसर दे दिया, जब पेरियार ने अपने से छोटी उम्र की महिला से विवाह किया। इस विवाह में उम्र का बड़ा फासला था लेकिन इसके लिए पेरियार ने किसी कानून अथवा नैतिकता का उल्लंघन नहीं किया था। इसमें एक वयस्क और सचेत स्त्री की सहमति और इच्छा का सम्मान था। लेकिन नौजवानों ने इस घटना को नैतिक रूप से अनुचित बता कर कळगम को छोड़ दिया और सी. अन्नादुरै के नेतृत्व में द्रविड मुनेत्र कळगम (डी.एम.के) का गठन किया। इसमें बाद में एक और विभाजन हुआ, जब एम. जी. रामचंद्रन के नेतृत्व में अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कळगम (ए.आई.डी.एम.के) का गठन हुआ।

9.6 पेरियार का धर्म चिंतन : नास्तिकता और बुद्धिवाद

धर्म मानव समाज में लम्बे समय तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। धर्म लोगों को उपासना, विश्वास और मूल्यों के द्वारा संचालित करता है। विज्ञान की क्रांति के बाद ज्ञान पर एकाधिकार के धर्म के दावे का अंत हो गया। अब कोई नहीं मानता है कि धरती सांप के फन पर टिकी है अथवा आकाश में सूर्य कोई देवता है। लेकिन भावनात्मक पक्ष में संतुलन के लिए यह अपनी आवश्यकता को रेखांकित कर खुद को बचा ले जाने के फेर में था। भारत में हिंदू धर्म की भूमिका जाति के रूप में संस्थागत असमानता को कायम रखने में थी। इसके वेद, वेदांत, पुराण, स्मृतियाँ और महाकाव्य विभिन्न स्तरों पर इसी

व्यापक उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। वेद वेदांत, कर्मवाद और पुनर्जन्म के दर्शन द्वारा जाति भेद के लिए तार्किक स्वीकृति का आधार देते हैं। महाकाव्य भावना प्रवण और नाटकीय उतार चढ़ाव वाले रोचक किस्सों के द्वारा जाति की संस्था को मजबूत करने का जतन करते हैं। पेरियार इनसे बेकार का शास्त्रार्थ करने के बजाय इसे समूचा ही खारिज कर देते हैं। उनके अनुसार हिंदू धर्म के ईश्वर, पारलौकिकता, आत्मा, पुनर्जन्म तथा कर्मफल आदि विश्वास मनुष्य के अपने ऊपर विश्वास की कीमत पर किए जा सकते हैं। स्वयं में विश्वास ही मनुष्य में जीवटता, उद्यमता साहस और जिजीविषा के गुण उत्पन्न करता है, जो मानव सभ्यता को आगे बढ़ाते हैं। धर्म समतापरक और न्यायपरक समाज के विकास की राह पर सबसे बड़ी बाधा है। यह अपने अनुयायियों में आचार, विचार संस्कार, कर्मकाण्ड के द्वारा एकरूपता लाने का प्रयास करता है। इसके लिए बाध्य करने हेतु स्वर्ग–नरक, जन्म–पुनर्जन्म तथा मोक्ष–बंधन आदि के प्रलोभन और आशंकाएं फैदा करता है। न ही इन सबका परीक्षण किया जा सकता है और न इनका अस्तित्व सिद्ध किया जा सकता है। धर्म की बातें न तो कारणता के शाश्वत नियम पर खरीं उतरती है और न ही किसी नवीनता का उद्घाटन करती हैं। यह कहा जाय कि आज घने बादल हैं अथवा पश्चिम विक्षोभ का प्रभाव है इसलिए बारिश होगी। इसमें घने बादल अथवा पश्चिमी विक्षोभ कारण है, जिनका परीक्षण मानवीय क्षमताओं के तहत हो सकता है और बारिश उसका कार्य है। जबकि धर्म और ईश्वर के बारे में सभी बातें उसी तरह तर्कहीन हैं जैसे यह कहना–'आज बारिश होगी अथवा नहीं होगी'। इसमें न कही कारण हैं और न ही उनके परीक्षण का अवसर। पेरियार की मूल चिंता थी कि धर्म ने अपनी व्यर्थता को ढाँपने के लिए भोले भाले लोगों के बीच अकल्पनीय अज्ञानता का प्रचार कर दिया है। उनकी अज्ञानता ही धर्म के ध्वज वाहक ब्राह्मण को उनके स्वच्छंद दोहन और शोषण की सुविधा मुहैया कराती है। वे अपने भोलेपन में अपने ही शोषण को नियति मानकर स्वीकार कर लेते हैं। इसीलिए पेरियार धर्म का बहिष्कार कर बुद्धि और विवेक को अपना प्रदर्शक बनाते हैं। वे कहते हैं–"बुद्धिवाद और धर्म एक साथ नहीं चल सकते हैं। धर्म, अंधविश्वास, आशंका और भय के द्वारा काम करता है। यह व्यक्ति को दबाता है, प्रगति को रोकता है और लोगों का दोहन करता है। उन्हें दैवीय सहायता के छलावे से आलसी और आशंकाओं के द्वारा डरपोक बनाता है।"

पेरियार ने अपने समय में मंदिर प्रवेश आंदोलन में हिस्सा लिया। बाद में इस आंदोलन की निस्सारता का अहसास भी किया। एक लम्बी लड़ाई के बाद पिछड़े–दलितों को मंदिर के पास की सड़क से गुजरने का मौका देने, दूसरी लड़ाई के बाद मंदिर की इमारत में प्रवेश करने का और अब मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश करने के लिए एक और लड़ाई। इस पर पेरियार का सब्र चूक गया। उन्होंने बेकार के काम में अपने लोगों को ऊर्जा जाया करते देखा तो मंदिर, मूर्ति, आस्था और ईश्वर को ही अपने महान प्रज्ञा से निरस्त कर दिया। धर्म के बगैर, लोगों के बीच में सहज मानवीय संबंधों की स्थापना को प्रेरित किया। बुद्धि और विवेक इन सामाजिक संबंधों के बनने से मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण की गुंजाइश ही समाप्त हो जाए।

समाज में बुद्धि और विवेक की चेतना के प्रसार में सबसे बड़ी बाधा रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों द्वारा फैलाई छद्म चेतना थी। साधारण जनता वेद और वेदांत के गूढ़ और रूखे तर्कों को समझ नहीं सकती थी। कर्मफल, पुनर्जन्म, माया, अद्वैत और प्रकृति–पुरुष को जान नहीं सकती थी, फिर उनसे लगाव और उन्हें अपनाने का प्रश्न ही कहा उठता है। इस काम को साहित्य की विधा में पुराण और महाकाव्यों के द्वारा पूरा किया गया। रामायण में केवल राम–सीता की कहानी नहीं है बल्कि इसमें वर्णाश्रम निर्वाह की चेतना से गूँथा गया एक दर्शन भी है। इसे ब्राह्मणवादी लेखकों ने भाव विभोर

रूप में काव्यात्मक ढंग से अलग–अलग स्थान और कालों में व्यक्त किया है। इसे लोक भाषा, रूपक, बिंब और प्रतीकों द्वारा व्यक्त किया गया है। इसमें सीता की पीड़ा है, जिसके एक धरातल पर गाँव की साधारण स्त्री भी सीता से जुड़ जाती है। लेकिन इस पीड़ा का कारण कर्मफल की गति है– 'होइ है वही जो राम रचि राखा'। इस प्रकार भावना में ब्राह्मणवादी दर्शन की जगह बना दी गई। पिछड़े वर्ग के मेहनती और सरल लोग इन कथाओं को सुनकर भावुक बनते है और ब्राह्म्णवादी चिंतन से जुड़कर अपने पतन के रास्ते पर अनजाने ही चलने लगते थे। पेरियार इस स्थिति से दुखी थे और इस आस्था के अंधकार को समाप्त करना चाहते थे। इसलिए पेरियार ने धार्मिक महाकाव्यों की आलोचना की। उन्होंने कठोर श्रम से 'इरामायपत्रांकल', 'रामायानापत्रिंकल' और 'रामायनाक्ककुरीपक्कल' आदि पम्पलेटों में रामायण की कहानी का नया पाठ प्रस्तुत किया। राम की कथा बहुत पुरानी है लेकिन जनमानस में वाल्मिकी और तुलसी के पाठ को ही मान्य बताया गया क्योंकि वे ब्राह्मणों के हितों को पूरा करते थे। जबकि जैनों और बौद्धों द्वारा किया गया रामकथा का पाठ इनसे कहीं अधिक पुराना है। अपितु जन चेतना से पूरी तरह से लुप्त है। पेरियार ने आधुनिक काल में रामकथा का पहला गंभीर पाठ प्रस्तुत किया। पाउला रिचमैन के अध्ययन के अनुसार इसके मुख्य बिंदु निम्न हैं–

- राम का आक्रमण आर्य संस्कृति का आक्रमण है। इसके मूल में द्रविडों को पराभूत कर ब्राह्मणवादी जाति व्यवस्था के द्वारा शोषण करना था।
- तथाकथित राक्षस सभ्यता एक समतापरक प्राचीन द्रविड सभ्यता थी, जिसमें जातिगत, धर्मगत शोषण का कोई स्थान नहीं था।
- राम का समूचा संघर्ष वीरता के उच्च आदर्शों पर खरा नहीं उतरता है। बालि जैसे महानतम वीर का वध किसी वीरता का प्रतीक नहीं हो सकता है। इस प्रसंग में अलग–अलग कथाओं में अलग–अलग पाठ हैं। केवल ब्राह्मणवादी लेखकों ने इसको सराहा और इस कायरता को लीला अथवा अवतार के बहाने से छुपाने का प्रयास किया है।
- रावण द्रविड सभ्यता के उज्जवल पक्ष को दर्शाता है। उसके शासन में एक बार भी जाति प्रथा की बबर्रता के चिन्ह नहीं मिलते हैं, जबकि राम ने इस प्रथा को बनाए रखने के लिए शम्बूक नामक निरापराधी संत को मार डाला। रावण ने पूर्ण नियंत्रण के बावजूद सीता की स्त्री मर्यादा पर कभी अतिक्रमण नहीं किया। वह चरित्रविहीन देवताओं और दूसरों की कमाई खाने वाले ऋषियों और ब्राह्मणों से विरोध रखता था। यह उसके शासन की न्यायप्रियता का संकेत देता है।

इस प्रकार पेरियार ने एक नेता होते हुए भी राजनीतिक कार्यों के बावजूद गहन अकादमिक उद्यम किया। इसका मकसद अज्ञानता के कुएं में पड़ी भोली जनता को वास्तविकता से परिचित कराना था। जनता को बुद्धि और विवेक की चेतना दिखाना ताकि वह हजारों साल पुराने ब्राह्मणवादी शोषण चक्र से मुक्त हो सके।

9.7 स्त्री मुक्ति से संबंधित विचार

पेरियार के समकालीन विचारकों के लिए स्त्रियों के प्रश्न बाल विवाह, विधवा विवाह और पुनर्विवाह आदि मुद्दों पर सीमित थे। पेरियार स्त्रियों के प्रश्न एवं मुद्दों को उसके आत्मसम्मान से जोड़कर देखते हैं। पेरियार मानते थे कि स्त्री की स्थिति में बदलाव लाने के लिए मात्र कुछ सामाजिक सुधार के मुद्दें प्रस्तुत कराना महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि स्त्रियों की मानवीय गरिमा को अबाधित रखने के लिए उन्हें मौलिक अधिकार प्रदान करने के की

आवश्यकता है। पेरियार ने स्त्री जीवन से जुड़े सामाजिक विरोधाभासों की ओर ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने विरोधाभास को इंगित करते हुए कहा कि शिक्षा का हिंदू धर्म में कोई देवता नहीं बल्कि देवी है– सरस्वती। जबकि इस धर्म में स्त्रियों को ही शिक्षा का अधिकार नहीं है। इसी तरह संपत्ति की देवी लक्ष्मी है, जबकि हिंदू स्त्री को पिता की संपत्ति में अधिकार नहीं है। उन्होंने केवल विचार नहीं रखें, बल्कि इसके लिए ठोस कदम उठाए जाने पर जोर दिया। चिंगलपेट में 1929 में आत्मसम्मान आंदोलन के पहले अधिवेशन में सरकार से यह अपील की कि स्त्रियों के जीवन सुधार हेतु स्त्रियों की संपत्ति में भागीदारी सुनिश्चित की जाए। स्त्रियों को उत्तराधिकारी के रूप में समान अधिकार और अपनी इच्छा से रोजगार चयन करने के लिए कानूनी उपाय किए जाए। स्त्री को मुक्त करना वास्तव में उसे धर्म और संस्कृति के दमनकारी बंधनों से मुक्त करना है। प्राचीन पितृसत्तात्मक व्यवस्था की स्थापना से पुरुष ने स्त्री की उत्पादकता और क्षमता को नियंत्रित करने के प्रयास करने शुरू कर दिए। ज्ञान के विस्तार के साथ ही भाव विस्तार होता है। पुरुष ने स्त्री को पहले शिक्षा से वंचित कर दिया और दूसरा उसे घर तक सीमित कर दिया। किसी भी व्यक्ति में ज्ञान संवर्धन के दो उपाय हैं– अध्ययन और आस–फास की दुनिया का विवेक सम्मत अवलोकन। स्त्री के लिए यह दोनों ही मार्ग अवरुद्ध हो गए थे। पेरियार का आत्मसम्मान आंदोलन आंदोलन दोनों ही अवरोधों को समाप्त करने की हिमायत करता है।

पेरियार स्त्री पुरुष संबंधों के बारे में बहुत सहजता से विचार करते हैं। प्राचीन आर्य व्यवस्था में जाति और पितृसत्तात्मक परिवार की सुरक्षा के लिए ब्राह्मण ग्रंथों ने स्त्री की यौन भावना को विभिन्न उपायों से नियंत्रित करने का प्रयास किया। इन उपायों के बाद उसे पवित्रता, नैतिकता, यौन शुचिता के बंधनों से जकड़ दिया। इस बंधन से बंधी स्त्री पति की चिता पर जलने को विवश कर दी जाती थी। पेरियार की आपत्ति यह थी कि पवित्रता का यह बंधन अकेले स्त्री को ही क्यों वहन करना पड़ता है, पुरुष के लिए यह मानक लागू क्यों नहीं किया जाता है। वे स्त्री और पुरुरू के बीच संबंध को शास्त्र नहीं प्रेम के संदर्भ में परिभाषित करते हैं। प्रेम के लिए तमिल भाषा में 'कडहल' शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह शब्द लगाव, स्नेह, इच्छा और बंधुत्व का मिला–जुला अर्थ देता है। इस भावना के साथ विवाह संस्था अपनी पूरी गरिमा को प्राप्त करती है। विवाह दो व्यक्तियों का मिलन है न कि सामाजिक समूहों का। वे विवाह जैसी संस्था को किसी प्रकार की परंपरा से मुक्त रखने का आवाह्न करते हैं। परंपराएं ऐसे कोमल सामाजिक संबंध पर बोझ की तरह भार डालती हैं। वे कहते हैं कि, "विवाह क्या है? इसका संबंध किसी परंपरा से कदापि नहीं है, क्योंकि यह स्त्री और पुरुष के बीच समझौता है। इसकी बुनियाद प्रेम, आफसी साझेदारी की संभावना और ज्ञान जैसे तत्व महत्वपूर्ण हैं। विवाह के पीछे लालच का भाव विनाशकारी हैं।" विवाह को समूह से जोड़ देने से प्रतिष्ठा और धन के अपव्यय जैसी स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। विवाह के अवसर पर पेरियार 'कन्यादान' जैसे शब्दों के प्रयोग पर आपत्ति करते हैं। ऐसा शब्द स्त्री को उसकी मानवीय गरिमा से वंचित कर उसे क्रय–विक्रय की वस्तु के दर्जे पर गिरा देता है। इसके स्थान फर 'तिरूक्कुरल' में अपनाए गए शब्द 'वल्कक्कई तुनई' अर्थात् 'जीवन साथी' के प्रयोग पर जोर देते हैं।

9.8 सारांश

पेरियार ने अपने क्रांतिकारी विचारों से केवल क्षेत्रीय नहीं बाल्कि राष्ट्रीय परिवेश पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। उनके आत्मसम्मान आंदोलन ने सदियों से पशुवत दर्जा पाने वाली पिछड़ी और दलित जातियों में सम्मान और गरिमा के भाव जगाये, उनके जीवन में

मनुष्यता के भाव का संचार किया और अधिकार की चेतना उत्पन्न की। उनकी वैचारिक ऊर्जा का स्रोत तमिल जीवन और परिवेश था लेकिन उनके चिंतन में राष्ट्रीय चिंता की झलक थी। यही वजह थी कि उनके विचारों का प्रसार सुदूर संयुक्त प्रांत तक में हुआ। रामस्वरूप वर्मा ने पेरियार के तर्क बुद्धिवाद से प्रेरित होकर 'अर्जक संघ' नाम का सामाजिक आंदोलन चलाया। इस संगठन ने पिछड़ी जातियों के बीच तर्क और विवेक की लौ को जलाए रखा। ललई सिंह यादव ने पेरियार की राह पर 'सच्ची रामायण' अनुदित और प्रकाशित करवा कर घर घर जाकर लोगों को वितरित की। उत्तर प्रदेश सरकार ने इस तार्किक और अकादमिक पुस्तक पर मनमाने रूप से पाबंदी लगा दी। इस पर उन्होंने न्यायालय में एक जुझारू मुकदमा लड़ा। उनके विचारों के कारण जनता ने उन्हें 'उत्तर भारत का पेरियार' कहकर सम्मानित किया। बिहार में त्रिसंघ ने सामाजिक परिवर्तन के लिए पेरियार की भावना का ही अनुसरण किया। इन प्रयासों के बावजूद सुनियोजित रूप से पेरियार की पहचान को क्षेत्रीय सीमाओं तक सीमित रख दिया गया। आत्मसम्मान आंदोलन की कोख से निकली द्रविड पार्टियों ने सांप्रदायिक और दिखावटी उदारपंथी राष्ट्रीय पार्टियों से गठजोड किए। सत्ता के लिए इन पार्टियों को तुष्ट करने के एवज में उन्होंने पेरियार के तर्क बुद्धिवाद और समाजवाद के क्रांतिकारी विचारों को ताक पर रख दिया। यहाँ तक कि हिंदू धर्म के जिस पूजा पाठ अनगिनत देवताओं, उनके कर्मकाण्डों, अंधविश्वासों, और दर्शन के खिलाफ पेरियार जीवन भर लड़े थे, उन सबकी तमिल समाज में आक्रामक रूप से वाफसी हो गई। इस जीवन पद्धति में जाति की असमानता स्वयंमेव ही वापस आने लगी। जिस असमानता के खिलाफ वे जीवन भर लड़ते रहे, उसी के चरम रूप 'छुआछूत' का आज भी चलन बदस्तूर जारी है। पिछड़े वर्ग के कुछ समूह हिंदुत्व में ब्राह्मण के गांवों में खाली किए गए स्थान को भरने के लिए उद्धत हो उठे और पल्लार, पेरियार और चिक्कलियार आदि दलित जातियों के प्रति हिंसात्मक रूप के साथ आक्रामक हो गए। दलितों के साथ भेदभाव और अपमान की घटनाएं रोजमर्रा के जीवन का अंग बन गईं। कुल मिलाकर आज का समाज पेरियार के प्रज्ञा और विवेक के महान आदर्शों के बजाय पुराने धार्मिक संस्कारों की ओर वापसी की राह पर है। इसके बावजूद आज के समय में आडम्बर, धर्म के ढकोसलों और चेतनाविहीन होते जा रहे मध्यवर्ग के लिए पेरियार के विचार उम्मीद के प्रकाश स्तंभ की तरह हैं।

प्रस्तुत इकाई में पेरियार के आंदोलन, चिंतन और विचारों को समझने की कोशिश की गई है। दक्षिण भारत में पेरियार ने जो संघर्ष किया और अपने वैचारिक चिंतन से सामाजिक बदलाव की जमीन तैयार की वह आज भी प्रासंगिक है। पेरियार ने सामाजिक बदलावों के लिए राजनीतिक रूप से सक्रीय भूमिका निभाई है। साथ–ही धार्मिक आडम्बरों से मुक्त होने के लिए चेतना निर्मित की। उनके आत्मसम्मान आंदोलन ने जो चेतना निर्मित की है वह मानवीय गरिमा की परिचायक है। पेरियार का सम्पूर्ण धर्म चिंतन नास्तिकता और बुद्धिवाद पर टीका हुआ है। वे स्त्री–पुरूष समानता के पक्षधर रहे हैं। उनका चिंतन स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्यों को स्थापित करने की दृष्टि प्रदान करता है।